PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume - 9 | Issue - 10 | October - 2020 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991 | DOI : 10.36106/paripex

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Political Science

सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के उत्प्रेरक के रूप में सोशल मीडिया

KEY WORDS: सोशल मीडिया, जागरूकता, परिवर्तन।

विभा दत्त*

एम. ए., नेट– जे.आर.एफ., स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार). *Corresponding Author

ABSTRACT

सोशल मीडिया संचार का एक ऐसा माध्यम है, जिसके पहुंच का दायरा विश्वव्यापी है।यह आज लोगों की दिनचर्या का एक अहम हिस्सा बन चुका है।इसके माध्यम से कोई भी आम व्यक्ति किसी भी विषय पर अपने विचार व्यक्त कर सकता है, इस प्रकार इससे अभिव्यक्ति की आजादी को एक नया रूप मिला है।सोशल मीडिया के माध्यम से आज वैसे मुद्दों अथवा विषयों पर भी चर्चा होने लगी है जिन पर पहले जागरूकता की कमी थी। मीटू आंदोलन से लेकर मानसिक स्वास्थ्य को लेकर लेकर जागरूकता फैलाने तक में सोशल मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों के उत्प्रेरक के रूप में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

भूमिका

आज सोशल मीडिया हमारे समाज में परिवर्तन की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।कोई भी मुद्दा डिजिटली लोकप्रिय होता है, यह वर्तमान समय की मांग भी है और प्रचलित रिवाज भी।सोशल मीडिया का प्रयोग करना काफी आसान है जिस कारण लोगों के एक बड़े समुदाय द्वारा इसका उपयोग किया जाता है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आई.ए.एम.ए.आई.)की रिपोर्ट के अनुसार भारत में मई 2020 तक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 504 मिलियन पहुंच गई है, जिनमें से अधिकांश इंटरनेट उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।इसके माध्यम से विभिन्न मुद्दों जैसे- पर्यावरणीय समस्याएं, लैंगिक समानता, राजनीतिक विचार, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर लोग खुलकर अपने विचार रखने लगे हैं।दूसरी ओर कुछ ऐसे विषय भी जिनपर पहले बात करने में लोग झिझकते थे, जैसे- मानसिक स्वास्थ्य, एलजीबीटी समुदाय तथा उनके अधिकार जैसे विषयों पर भी लोग अब सोशल मीडिया पर चर्चा करने लगे हैं।यहां तक कि अब पशुओं के अधिकार की भी बात होने लगी है और पशुओं के प्रति होने वाले निर्मम व्यवहार की सोशल मीडिया पर जमकर आलोचना होती है। किसी भी स्थानीय मुद्दे को वैश्विक मुद्दा बनने में देर नहीं लगती। इस प्रकार सोशल मीडिया कई संवेदनशील विषयों पर हमें सोचने को मजबूर कर देता है, जिससे परिवर्तन की नींव रखी जाती है।

सोशल मीडिया और लैंगिक मुद्दे

हाल के वर्षों में लैंगिक मुद्दों पर एक बड़ी संख्या में लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।यह देखा गया है कि महिला अधिकार व सुरक्षा जैसे विषयों पर सोशल मीडिया पर एक बड़े तबके द्वारा आवाज उठाए जाने से सरकार भी महिला-संबंधी नीतियों को बनाने और वर्तमान कानूनों को और कठोर करने को मजबूर हुई है।वर्ष 2012 में दिल्ली में हुए सामूहिक दुष्कर्म कांड के बाद पीड़िता को न्याय दिलाने हेतु फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से लोगों ने न केवल सरकार पर दबाव बनाया बल्कि हजारों की संख्या में दिल्ली की सड़कों पर पीड़िता को न्याय दिलाने के लिए एकजुट भी हुए, जिससे सरकार ने न केवल बलात्कार संबंधी कानून में सजा का प्रावधान और सख्त किया बल्कि पीड़िता को जल्द - से - जल्द न्याय दिलाने हेतु फास्ट ट्रैक कोर्ट का भी गठन किया गया। वर्ष 2017 में हॉलीवुड से शुरू हुआ मीटू आंदोलन ने 2018 तक भारत में भी जोर पकड़ लिया और ट्विटर तथा अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर महिलाएं अपने साथ हुए यौन- उत्पीड़न की घटनाएं साझा करने लगीं। इससे बड़े स्तर पर महिलाओं के साथ रोजमर्रा की जिंदगी में घटने वाली अश्लील हरकतों, यौन- उत्पीड़न आदि के विरोध में भी महिलाओं को आवाज उठाने का साहस व मंच मिला। साथ ही मीटू आंदोलन के माध्यम से आंदोलनकारियों ने सरकार से कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन- उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 को मजबूत करने की भी मांग की। इसके अलावा पैडमैन चैलेंज, सेल्फी विथ डॉटर जैसे अनेक सोशल मीडिया अभियानों ने महिलाओं के प्रति हमारे समाज के नजरिए में सकारात्मक बदलाव लाने का काम किया है।

सोशल मीडिया तथा पर्यावरण के प्रति जागरूकता

पर्यावरण मानव अस्तित्व के लिए काफी महत्वपूर्ण है। विकास की अंधाधुंध दौड़ ने पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचाया है। ऐसे में पर्यावरण की रक्षा के लिए जनसाधारण विशेषकर युवा वर्ग द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार के आंदोलनों का रास्ता अपनाया गया है। राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड ने अप्रैल 2020 में नॉर्थईस्ट कोलफील्डस को असम के देहिंग पटकाई वन्यजीव अभयारण्य के 243 एकड़ों में कोयला खनन की इजाजत दे दी। इस प्रकार का खनन वहां के वन्यजीवों के लिए हानिकारक साबित हो सकता था, इसलिए अखिल असम छात्र संगठन (ए. ए.एस.यू.)और अखिल असम मटक युवा छात्र सम्मेलन के सदस्यों ने मई 2020 में इसका पुरजोर विरोध किया। इंटरनेट पर विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर #सेव_देहिंग_पटकाई नाम का हैशटैग चलाया गया तथा काफी बड़ी संख्या में लोगों ने इसका समर्थन किया। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि फिलहाल नॉर्थईस्ट कोलफील्ड्स ने खनन का काम रोक दिया है और यह मामला गुवाहाटी उच्च न्यायालय में है।इसी प्रकार साल अगस्त 2019 में बंबई उच्च न्यायालय ने मुंबई मेट्रो निगम को मुंबई के आरे कॉलोनी पर फैले विस्तृत वन को साफ करके वहां मुंबई मेट्रो रेल निगम के गैरेज के निर्माण की अनुमति दे दी। इसके विरोध में पूरे शहर में 'आरे बचाओ' प्रदर्शन होने लगे। सोशल मीडिया पर भी आरे वनों को बचाने के लिए आवाज उठाई गई, जिससे सरकार पर भी दबाव बना और नवंबर में महाराष्ट्र की नई सरकार द्वारा वनों की कटाई पर रोक लगा दी गई ह। हालांकि आरे को बचाने की लड़ाई अभी भी जारी है। इसी प्रकार बंगाल के सुंदरवन के बचाव के लिए #सेव_द_सुंदरवन जैसे कई हैशटैग अभियान चलाए गए। दिल्ली में भी जब वहां के भयंकर प्रदूषण स्तर के कारण सांस लेना भी जानलेवा साबित हो सकता था तब सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए सोशल मीडिया पर दिल्ली वालों ने #राइट_टू_ब्रेथ अभियान चलाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली

सरकार को किसानों द्वारा पराली जलाने के मुद्दे पर काम करने का आदेश दिया तथा केंद्र सरकार ने भी 'ग्रीन फंड' के पैसे को वायु प्रदूषण से मुकाबला करने के लिए उपयोग करने का निर्णय लिया।

इस प्रकार सोशल मीडिया के माध्यम से किसी एक क्षेत्र की पर्यावरण संबंधी समस्या पर पूरे देश-दुनिया का ध्यान आकृष्ट किया जा रहा है,जिससे सरकारों पर पर्यावरण संरक्षण को भी ध्यान में रखकर नीतियां बनाने का दबाव बनता है।साथ ही जनता में भी इस तरह के अभियानों के माध्यम से पर्यावरण के प्रति जवाबदेही की भावना आती है।

सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य

इन दिनों भारत में मानसिक स्वास्थ्य का मुद्दा एक गंभीर चर्चा का विषय बना हुआ है। विशेषकर कोविड-19 महामारी के दौरान लॉकडाउन की वजह से लोगों में इस तरह की समस्याओं में और ज्यादा इजाफा हुआ। मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे पर तब विशेष रूप से लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ जब बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या की खबर सामने आई। इसके बाद से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे ट्विटर, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य के बारे में चर्चा होने लगी तथा इस विषय पर बात कर लोग अन्य लोगों को भी जागरूक करने लगे हैं और एक ऐसे माहौल के निर्माण का प्रयास किया जाने लगा,जब अवसाद,चिंता जैसी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से ग्रसित व्यक्ति अपनी बात साझा कर सकें तथा उन्हें इससे लड़ने में मदद मिल सके।अब लोगों विशेषकर युवाओं द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि शारीरिक स्वास्थ्य के समान ही मानसिक स्वास्थ्य को भी गंभीरता से लिया जाए।नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2019 में 1.39 लाख लोगों ने आत्महत्या किया, जिनमें से 67 प्रतिशत युवा (18 से 45 आयुवर्ग के) थे। इसलिए हमारे समाज में अब मानसिक स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाना अति आवश्यक हो गया है और यह काम सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है।

सोशल मीडिया तथा मौलिक अधिकार

हमारे संविधान के भाग-3 में व्यक्ति के मौलिक अधिकार की व्यवस्था की गई है। आजादी के बाद से लेकर आज तक लोगों के ये अधिकार सुनिश्चित कराने हेतु सरकार, न्यायालय, मीडिया, सामाजिक कार्यकर्ता आदि सभी प्रयासरत हैं, और काफी हद तक इन अधिकारों को सुनिश्चित कराने में सफलता भी मिली है।समय-समय पर सर्वोच्च तथा उच्च न्यायालय द्वारा मौलिक अधिकारों की व्यापक व्याख्या की गई है। लेकिन फिर भी समाज के कई ऐसे वर्ग व समुदाय हैं, जो अभी भी इन अधिकारों से वंचित हैं।सोशल मीडिया के माध्यम से जिम्मेदार नागरिक के रूप में कई लोग इन हाशिये पर स्थित लोगों के अधिकारों के लिए आवाज उठाते हैं। सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज बनता है जो समाज की मुख्यधारा से अलग हैं। उदाहरण के लिए, भारत में आज भी एलजीबीटी समुदाय के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया जाता है तथा समाज व परिवार से उन्हें कई प्रकार के अत्याचार व शोषण का सामना करना पड़ता है।हालांकि सोशल मीडिया पर एलजीबीटी समुदाय को लेकर विभिन्न प्रकार के जागरूकता अभियान के कारण अब लोग धीरे-धीरे इन्हें स्वीकार कर रहे हैं, फिर भी अभी इनकी स्थिति काफी संतोषजनक नहीं है।

निष्कर्ष

आज सोशल मीडिया संचार का एक ऐसा माध्यम बन गया है जो लोगों द्वारा अपने विचार व्यक्त करने का सबसे आसान वह प्राथमिक मंच बन गया है।जहां एक और इसके कारण लोगों के जागरूकता का स्तर बढ़ा है,वहीं दूसरी और सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़ फैलने,साइबर अपराध, साइबर वुलिंग जैसी घटनाएं भी सामने आ रही हैं।इस प्रकार एक ओर सोशल मीडिया के कारण समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तन आ रहे हैं,तो वहीं दूसरी ओर इससे नई प्रकार की सामाजिक समस्याएं भी खड़ी होने लगी हैं।एक अन्य समस्या यह भी है कि कई बार ऐसा होता है कि जिन सामाजिक बदलावों या सोशल मीडिया अभियानों को लोग सोशल मीडिया पर साझा व समर्थन करते हैं उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू नहीं करते। इस प्रकार सोशल मीडिया एक 'आभासी दुनिया' है।लेकिन इन कमियों के बावजूद इसके सकारात्मक पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।सोशल मीडिया ने आज हमारे समाज में कई ऐसे परिवर्तनों की नींव रखी है जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।इसलिए आज जरूरत है कि हम सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलुओं के प्रति सचेत रहते हुए इसका सकारात्मक उपयोग करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Rajesh, K., & Thapa, D. (2014). Social media as a catalyst for civil society movements in India: A study in Dehradun city. Sage journal, 17(8), 1299-1316.
2. Bhushan, A., & Kumar, P. R. (2018) " impact of social media on Indian society towards women".Impact of social media on society, Aacademic book publications, chapter 40, pp. 171-174.
3. Chakrabart, K. (2013). Gender justice and social media networking in India : New frontiers in connectedness. The International Academic forum.
4. यादव,संध्या. (2020). वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया की प्रासंगिकता : एक अध्ययन. राधाकमल मुखर्जी: चिंतन परंपरा, जनवरी-जून 2020, पृष्ठ संख्या 140-147.
5. उपाध्याय, डॉ. वि. प्र. सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव. Paripex- Indian Journal of Research, 5(3), March 2016, pp. 214-215.
6. 14 Mass movements led by women in India that made a difference to women's lives, Women's web, November 1, 2018, from https://www.womensweb.in/2018/11/mass-movements-led-by-women-in-india-womens-movements-nov18wk1sr/
7. Hashtag women's rights: 12 social media movements you should follow, UN Women, Jun 29 2019, from https://medium.com/@UN_Women/hashtag-womens-rights-12-social-media-movements-you-should-follow-6e31127a673b
8. Social media and rise of new age feminism, mint, 11 Oct 2018, from https://www.livemint.com/ Politics/ czyCLljjAOIs 6MtFLO4u3K/Social-media-and-rise-of-new-age-feminism.html?facet=amp
9. Elizabeth, V. S. #MeToo in India: 'Women's rights need more than just a social media', from https://www.dw.com/en/ metoo-in-india-womens-rights-need-more-than-just-a-social-media-campaign/a-42989744
10. Kurian, Alka. #MeToo is riding a new wave of feminism in India, The conversation, Feb 1, 2018, from https://the conversation.com/metoo-is-riding-a-new-wave-of-feminism -in-india-89842? utm_ medium= ampwhatsapp & utm_source =whatsapp
11. Mitter, Sohini. With half a billion active users, Indian internet is more rural, local, mobile-first than ever. Yourstory, 13 May 2020, from https://yourstory.com/2020/05/half-billion-active-users-indian-internet-rural-local-mobile-first
12. India now has over 500 million active Internet users: IAMAI, livemint, 5 May 2020, from https://www.livemint.com/news/india/india-now-has-over-500-million-active-internet-users-iamai-11588679804774.html
13. Sharma, Piyush. Harbingers of change: Mental health awareness initiatives by Indian brands and organisations, Reputation today, Feb 13 , 2020, from https://reputationtoday.in/harbingers-of-change-mental-health-awareness-initiatives-by-indian-brands-and-organisations/
14. Srivastava, K., Chatarjee, K., & Bhat, P. K. Mental health awareness : The Indian Scenario. Industrial Psychiatry journal, 2016 Jul-Dec, 25(2), 131-134, from https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC5479084/
15. Story in numbers: India has suicide rate higher than the global average, Business Standard, Oct 13,2019, from https://wap.business-standard.com/article-amp/politics/story-in-numbers-india-has-suicide-rate-higher-than-the-global-average-119101300672_1.html
16. More than 90,000 young adults died by suicide in 2019 in India: NCRB report, India Today, Sept. 2, 2020, from https://www.indiatoday.in/amp/ diu/ story/ ncrb-report-data-india-young-adults-suicide-2019-india-1717887-2020-09-02